न्यू ओर्लियन्स (यू.एस.ए.)
सितम्बर २३, १९९९

सन्देश संख्या १५

अनुभव से नहीं बल्कि शून्यता के आयाम से देखें

अनुभव से नहीं बल्कि शून्यता के आयाम से जो देखा जाता है वही तो ऐसी जागरूकता है जिसमें प्रीतिकर एवम् अप्रीतिकर में वर्गीकरण अथवा विकल्पों की पूर्णतया अनुपस्थिति हेतु कोई उत्तेजना एवम् उपद्रव सम्भव नहीं हो पाता है। यही तो है ध्यान। तब एक अनिर्वचनीय आशीर्वाद के साथ परम मंगलमय का मूक आगमन होता है। यह हर बार आश्चर्यजनक ढंग से नवीन होता है, यद्यपि प्रत्येक समय शायद वह वही होता है। यह अति संवेदनशीलता के बावजूद भी अत्यन्त प्रबल एवं सशक्त होता है। यह तो तृण के एक पर्ण की वह अद्भुत शक्ति है जो एक आकस्मिक मृत्यु का सहर्ष वरण कर सकती है। यह परिपूर्ण रूप से आता है तथा एक झलक से ही चला जाता है परन्तु वह झलक सभी काल एवं महाकाल से परे होता है।

''निर्मन'' के पारावार में विलीन हो जाना ही तो नगण्य या क्षुद्र मन का योनिमुद्रा में ओंकार का विस्फोट है जो कि यथार्थ ध्यान एवं दिव्य आवेश का आरम्भ है।

ध्यान, चित्तवृत्ति की अपनी उलझनों व अवरोधों, अपने कल्पना जाल एवं मिथ्याभिमान तथा आपाधापी व भ्रान्तियों के जाल में फँसने की संलिप्तता नहीं बल्कि उसका सम्पूर्ण विनाश है।

अनुभव रहित सचेतनता का सहज उदाहरण

जब कोई वास्तव में यह समझने के लिए पर्याप्त रूप से परिपक्व हो जाता है कि मान और अपमान मन के मिथ्याभिमान एवं स्वार्थपरता की गतिविधियाँ हैं तब मान अथवा अपमान उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं छोड़ पाता है। उस अवस्था में उसे किसी प्रकार के मान या अपमान की अनुभूति नहीं होगी परन्तु वह आसपास घटित हो रही ऐसी गतिविधियों के प्रति सचेतन रहेगा। परिपक्वता उस आयाम से सम्बन्धित है जो मन के परे है। मन सदैव अपरिपक्व होता है। मन कभी भी उस परम पवित्र की अनुभूति नहीं कर सकता है क्योंकि समस्त अनुभव निरर्थक हैं। अनुभव का घटित होना ही इस तथ्य का पर्याप्त प्रमाण है कि वह शाश्वत नहीं है। यह एक ऐसा संकेत मात्र है जिससे अग्रसर होने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

यह यात्रा निरन्तर चलती रहनी चाहिए। कभी भी निष्प्राण एवं प्रवाहहीन मतवाद में अवरूद्ध न हो जायें। वे अद्वितीय मानव प्राणी (अहंकारी व्यक्तित्व नहीं) धन्य हैं जो कि दिव्य परमानन्द के साम्राज्य में प्रविष्ट होते हैं।

जय क्रियायोग।